ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

वर्ष 46 | अंक 14 | पृष्ठ 08 | दयानन्दाब्द 199 | एक प्रति ₹ 5 | वार्षिक शुल्क ₹250 | सोमवार, 30 जनवरी, 2023 से रविवार 05 फरवरी, 2023 | विक्रमी सम्वत् 2079 | सृष्टि सम्वत् 1960853123
दूरभाष/ 23360150 | ई-मेल/ aryasabha@yahoo.com | इन्टरनेट पर पढ़े/ www.thearyasamaj.org/aryasandesh

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयंती: दो वर्षीय आयोजन

भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी करेंगे 12 फरवरी को शुभारंभ

तीव्र गति से हो रहीं हैं तैयारियां, संपूर्ण आर्य जगत में उत्साह की लहर

5 फरवरी को अपने घरों को लाइटों, लड़ियों से सजाना आरम्भ करें और 12 फरवरी तक अवश्य ही सजाएं, ओ३म् ध्वज लगायें, सजे हुए घरों के साथ अपने परिवार की फोटो लेकर सोशल मीडिया पर हैशटैग #dayanand 200 के साथ शेयर करें

5 से 11 फरवरी के बीच किसी भी दिन सभी सदस्य शाम को संध्या के लिए एकत्रित हों और सजे हुए भवन के साथ फोटो लेकर हैशटैग #dayanand 200 के साथ शेयर करें

सब सदस्य एक-एक करके महर्षि के चित्र के साथ वीडियो बनायें और बधाई संदेश देते हुए सोशल मीडिया पर हैशटैग #dayanand 200 के साथ शेयर करें

दिल्ली एनसीआर का प्रत्येक आर्य समाज, गुरुकुल, कन्या गुरुकुल, आर्य विद्यालय, आर्य अनाथालय, आर्य संस्थान बसों द्वारा भारी संख्या में पहुंचेंगे इंदिरा गांधी इंडोर स्टेडियम

इस महान ऐतिहासिक अवसर पर अपने परिवार के सभी सदस्यों, इष्ट-मित्रों और पड़ोसियों को भी साथ लेकर आएं। विशेषकर बच्चों और युवाओं की भागीदारी है बहुत जरूरी, इसलिए युवाशक्ति को साथ लेकर आएं

उमंग, उत्साह और उल्लास के साथ ही अनुशासन और व्यवस्था का स्वयं ही रखेंगे ध्यान

आर्य समाज के भवनों, विद्यालयों, गुरुकुलों एवं आर्य संस्थाओं के भवनों को सुन्दरता से सजाया जाए, और बाहर बधाई के दो या तीन होर्डिंग लगाये जाएं। होर्डिंग का डिजाइन www.thearyasamaj.org से डाउनलोड करें

दिल्ली के बाहर के लोग जो दिल्ली नहीं आ पा रहे हैं वे 12 फरवरी 2023 को प्रातः 9:00 बजे अपने आर्यसमाज/आर्य संस्थान में एल.ई.डी. स्क्रीन अथव टी.वी. पर आर्य संदेश टी.वी. चलाकर सबको भागीदार बनायें

सभी संस्थाएं कार्यक्रम में पहुंचने हेतु अपनी बसों के आगे 200 वीं जयंती का बैनर www.thearyasamaj.org से डाउनलोड कर बनवायें और ओ३म् ध्वज सहित अवश्य लगाकर आयें

स्टेडियम में कोई भी बैग, धातु की वस्तु, जैसे कि चाकू आदि ले जाने की अनुमति नहीं है। छोटे लेडीज पर्स, बेल्ट, कार की चाबी और मोबाइल ले जा सकते हैं।

गले में पीत वस्त्र, सिर पर पगड़ी अथवा टोपी और हाथ में ओ३म् ध्वज लेकर महर्षि का जय-जयकार करते, भजन गाते और जयघोष करते आएंगे आर्यजन

सभी आर्यजन अपने क्षेत्रीय समाचार पत्रों में उपरोक्त बिंदुओं पर आधारित चित्रसहित समाचार अवश्य प्रकाशित करवाएं

वेदवाणी-संस्कृत

पूर्ण आयु प्राप्त करें

वेद-स्वाध्याय

तस्मा अग्निर्भारतः शर्म यंसज्ज्योक् पश्यात् सूर्यमुच्चरन्तम्।
यो इन्द्राय सुनुवामेत्याह नरे नर्याय नृतमाय नृणाम्॥

-ऋक्. 4 । 25 । 4

ऋषिः-वामदेवः॥ देवता-इन्द्रः॥ छन्दः-भुरिक्पङ्क्तिः॥

शब्दार्थ- **नरे**=असली नर **नर्याय**=नरों के हितकारी और **नृणां नृतमाय**=नरों में नरोत्तम **इन्द्राय**=इन्द्र के लिए **यः**=जो पुरुष **सुनुवाम इति**='आओ, हम उसका यजन करें' ऐसा **आह**=कहता है **तस्मै**=उसके लिए **भारतः अग्निः**=भरण करने वाला प्राण ाग्नि **शर्म**=अपनी शरणों, सुख को **यंसत**=देता है, वह **ज्योक्**=चिरकाल तक **उच्चरन्तम्**=उदय होते हुए **सूर्यम्**=सूर्य को **पश्यात्**=देखता है।

विनय- ''आओ हम इन्द्र का यजन करेंगे'' -इस प्रकार जो मनुष्य कहता है, जो स्वयं इन्द्र का यजन करता है और दूसरों को यज्ञ करने की प्रेरणा करता है, जो यह यज्ञ करता और करवाता है, वह मनुष्य निःसन्देह महापुरुष होता है। वह सच्चा ब्राह्मण, मनुष्य-समाज का सच्चा नेता और आदर्श पुरुष बनता है। ओह! वह इन्द्र जो असली नर है, असली पुरुष है, जो हम नरों का एकमात्र हितकारी है और जो हम नरों में 'नृतम' है, हम पुरुषों में पुरुषोत्तम है, उस इन्द्र का यदि हम नर लोग यजन नहीं करेंगे तो और किसका यजन करेंगे? उस नेता 'नर' इन्द्र का, जिसके हाथ में इस विशाल ब्रह्माण्ड की बागडोर है, जो इस चराचर सृष्टि का संचालक है, उस 'नर' का यजन करना मनुष्य-'नर' की उन्नति के लिए आवश्यक है। इस इन्द्र-'नर' का यजन किये बिना मनुष्य अपने मनुष्यत्व की पूर्णता को कभी नहीं प्राप्त कर सकता, पूर्ण नर नहीं हो सकता। इसलिए वे ही महिमाशाली पुरुष अपने पुरुषार्थ को प्राप्त कर रहे हैं जो इन्द्र का यज्ञ कर रहे हैं और करवा रहे हैं।

ऐसे ही इन्द्रयाजी पुरुषों को 'भारत अग्नि' अपने शरण में लेता है, अपना आश्रय, अपना सुख प्रदान करता है। 'भारत अग्नि' वह अग्नि है जो हमारा-हमारे शरीर और इस संसार-शरीर का भरण (धारण, पोषण) करता है। यह प्राणाग्नि है, इसी अग्नि में इन्द्र के लिए यज्ञ किया जाता है। इसमें जब हम इन्द्र के लिए अपने सब भोग्यजगद्रूपी सोम का और भोगेच्छा-रूपी सोमरस का हवन करते हैं तो हममें यह प्राणाग्नि खूब प्रदीप्त होता है और प्राणरूप सूर्य 'इन्द्र' के द्वारा हमारी सोमाहुति को इन्द्र परमेश्वर तक पहुँचाता है। एवं, प्रदीप्त हुआ यह 'भारत अग्नि' हमारा भरण करता है, हमारा पूरा धारण-पोषण करता है। हमें अपना महान् आश्रय, रक्षण, आनन्द प्रदान करता हुआ हमारा धारण और पोषण करता है। हममें 'भारत' प्राण भरपूर होता है और इस प्राण के साथ हमारा सम्पूर्ण मनुष्यत्व विकसित होता है। तब सूर्य देव हमारे लिए चिरकाल तक प्राण, प्रकाश, जागृति और जीवन देता हुआ उदित होता है। हम पूर्ण जीवन प्राप्त करते हैं। प्राणरूप आदित्य से नित्य नया प्राण-प्रकाश पाते हुए पूर्ण आयु तक उसके दर्शन करते हुए पूर्ण जीवन प्राप्त करते हैं। इस प्रकार हम महान् शक्ति, महान् जीवन वाले महापुरुष बन जाते हैं। यह सब इन्द्र-यजन की महिमा है। इन्द्रयाजी बनकर भारत अग्नि की शरण पाने की महिमा है।

-:साभार:- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

संपादकीय

प्रेम और करुणा की प्रतिमूर्ति थे, महर्षि दयानंद सरस्वती: 200 वीं जयंती एक महान अवसर

ऋषि मुनियों की पुण्य भूमि भारत में महर्षि दयानंद सरस्वती जी का बहुआयामी व्यक्तित्व अनुपम, अद्वितीय और विशाल था। मानव समाज के ऊपर उनके अनगिनत उपकार स्तुत्य एवं चिरकाल तक अविस्मरणीय रहेंगे। सन 1824 में टंकारा गुजरात में जन्मे महर्षि का संपूर्ण जीवन व्रत मानव समाज के सर्वांगीण विकास और उत्थान के लिए समर्पित था। उनके जीवन दर्शन के मूल्य सिद्धांतों को देखकर ज्ञात होता है कि उनकी निजी आवश्यकताएं तो नाम मात्र की थी, एक कोपीन धारण करके भी वे अपने जीवन में संतुष्ट और आनंदित थे। न किसी भव्य भवन में निवास करने की भावना और न किसी प्रकार के धन धान्य की कामना, केवल उनकी यही महत्वाकांक्षा थी कि संपूर्ण विश्व में वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार हो, वैदिक शिक्षाओं के अनुसार सब अपना जीवन यापन करें, सारा मानव समाज वेद का अनुयाई बने, समस्त भूमंडल पर आर्य साम्राज्य की स्थापना हो, मनुष्य मात्र भय, भ्रम, ढोंग, पाखंड, अंधविश्वास से ऊपर उठकर शारीरिक, आत्मिक, सामाजिक स्तर पर सबल बनें, सब उन्नति, प्रगति और सफलता प्राप्त करें, सारा संसार आर्य बने, सभी के भीतर अभयता, संयम और सदाचार का समन्वय हो, सभी सत्य सनातन वैदिकधर्मी बनकर सुख, शांति, समृद्धि की अभिवृद्धि करें।

वेदों के प्रकांड विद्वान, महान समाज सुधारक, आर्य समाज के संस्थापक महर्षि की सरलता, सहजता तो देखिए उन्होंने लोकोपकार के लिए वेदों पर आधारित 2 दर्जन से अधिक ग्रंथों की रचनाएं की। जिनमें कालजई अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, संस्कारविधि, गोकरुणा निधि इत्यादि प्रमुख हैं, मानव समाज को

"वेदों के प्रकांड विद्वान, महान समाज सुधारक, आर्य समाज के संस्थापक महर्षि की सरलता, सहजता तो देखिए उन्होंने लोकोपकार के लिए वेदों पर आधारित 2 दर्जन से अधिक ग्रंथों की रचनाएं की। जिनमें कालजई अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, संस्कारविधि, गोकरुणा निधि इत्यादि प्रमुख हैं, मानव समाज को सुदिशा देने हेतु आपने हजारों प्रवचन किए, अनेकों शास्त्रर्थों में विजय प्राप्त की। किंतु फिर भी आपने कहा कि अगर मेरे कथनों और ग्रंथों में किसी को कहीं त्रुटि या भूल प्रतीत हो तो मुझे सौहार्द के साथ सुझाए, मैं अनुकूलता के साथ उस पर विचार करूंगा और वैसा ही उन्होंने किया इससे आगे भी महर्षि ने कहा कि मेरे कथनों और ग्रंथों में जो-जो बातें वेद अनुकूल हैं उन्हीं को तुम ग्रहण करना और यदि कहीं कोई बात वेदानुकूल न लगे तो उसका परित्याग करना। उन्होंने जो कुछ कहा और जो कुछ लिखा वह केवल वेदों के रहस्यों को समझाने के लिए कहा और लिखा, उन्होंने अपने प्रवचनों और लेखों से कोई बात वेद के विरुद्ध नहीं कही।"

सुदिशा देने हेतु आपने हजारों प्रवचन किए, अनेकों शास्त्रर्थों में विजय प्राप्त की। किंतु फिर भी आपने कहा कि अगर मेरे कथनों और ग्रंथों में किसी को कहीं त्रुटि या भूल प्रतीत हो तो मुझे सौहार्द के साथ सुझाए, मैं अनुकूलता के साथ उस पर विचार करूंगा और वैसा ही उन्होंने किया इससे आगे भी महर्षि ने कहा कि मेरे कथनों और ग्रंथों में जो-जो बातें वेद अनुकूल हैं उन्हीं को तुम ग्रहण करना और यदि कहीं कोई बात वेदानुकूल न लगे तो उसका परित्याग करना। उन्होंने जो कुछ कहा और जो कुछ लिखा वह केवल वेदों के रहस्यों को समझाने के लिए कहा और लिखा, उन्होंने अपने प्रवचनों और लेखों से कोई बात वेद के विरुद्ध नहीं कही। सत्य पर अडिग महर्षि दयानंद ने कहा था कि विरोध की आंच से सत्य की कांति चौगुना चमकती है। दयानंद को यदि कोई तोप के मुंह के आगे रखकर भी पूछेगा कि सत्य क्या है तब भी उनके मुंह से वेद की श्रुति ही निकलेगी। ऐसे निर्भीक महान संन्यासी सा उदार हृदय संसार में कोई अन्य नजर नहीं आता। एक तरफ उनका वेदों के प्रति अटूट विश्वास, अद्भुत आत्मबल, दूसरी तरफ़ दयालुतापूर्ण उदारता, सरलता सहजता। आधुनिक परिवेश में अगर देखा जाए तो कोई भी वक्ता, लेखक, चिंतक अपनी कही हुई बात को मनवाने के लिए आग्रह और दुराग्रह करने से भी पीछे नहीं हटता लेकिन महर्षि एक ऐसे महापुरुष थे जिन्होंने अपने प्रत्येक शब्द को प्रमाण तथा कसौटी पर कसे जाने की पूरी छूट और अपने से असहमत होने का सबको पूरा अधिकार दिया। महर्षि के जीवन में कहीं पर भी अहम भाव के दर्शन नहीं होते, उन्होंने संसार का इतना बड़ा उपकार किया की स्त्री, पुरुष, बच्चे,

- शेष पृष्ठ 7 पर

महर्षि की 200 वीं जयंती पर उनकी बहुउपयोगी शिक्षाओं का करें प्रचार-प्रसार

स्वदेशी का संदेश- परदेशी स्वदेश में व्यवहार व राज्य करें तो बिना दारिद्रय और दुख के दूसरा कुछ भी नहीं हो सकता।

-सत्यार्थ प्रकाश दशम समुल्लास पृष्ठ- 251

गोरक्षा संदेश- हे राजपुरुष, जैसे सूर्य मेघ को मार और उसको भूमि में गिराकर सब प्राणियों को प्रसन्न करता है। वैसे ही गौओं को मारने वालों को मार गो आदि पशुओं को निरंतर सुखी करो। **-ऋग्वेद भाष्य 1/21/10**

किसान की महिमा- जो जन भूमि के गुणों को जानने वालों की विद्या को जानके उससे उपयोग करना जानते हैं वे अत्यन्त बल को पाकर सब पृथ्वी का राज्य कर सकते हैं। **-ऋग्वेद भाष्य 1/160/5**

राष्ट्र प्रेम- जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे होगा, उसकी उन्नति तन-मन-धन से सब जने मिलकर प्रीति से करें।

-सत्यार्थ प्रकाश 11वाँ समुल्लास

संस्कृत ही सभी भाषाओं का मूल है- सब देश भाषाओं का मूल संस्कृत है। संस्कृत जब बिगड़ती है तब अपभ्रंश कहाता है। फिर अपभ्रंश से देश भाषाएं होती हैं। जैसे कि 'घट' शब्द से घड़ा, 'घृत' शब्द से घी, 'दुग्ध' शब्द से दूध, 'नवीन' शब्द से नैनू, 'अक्षि' शब्द से आंख, 'कर्ण' शब्द से कान, 'नासिका' शब्द से नाक, 'जिह्वा' शब्द से जीभ, 'मातर' शब्द से मादर, 'यूयं' शब्द से यू (You), 'वयं' शब्द से वी (We), 'गूढ़' शब्द से गौड (God), इत्यादि जान लेना।

राजा वंशक्रमानुगत न होकर निर्वाचित होना चाहिए- यह सभापति या सभाध्यक्ष राजा वंशक्रमानुगत न होकर 'निर्वाचित' या प्रजाजन (जनता) द्वारा इस पद पर नियुक्त होना चाहिए। **-ऋग्वेद भाष्य**

राजा प्रजा धर्म विषय- ''.....आर्यों की यह एक बात बड़ी उत्तम थी कि जिस सभा वा न्यायाधीश के सामने अन्याय हो, वह प्रजा का दोष नहीं मानते थे, किन्तु वह दोष सभाध्यक्ष, सभासद् और न्यायाधीश का ही गिना जाता था। इसलिए वे लोग सत्य न्याय करने में अत्यन्त पुरुषार्थ करते थे, जिससे आर्यावर्त्त के न्यायघर में कभी अन्याय नहीं होता था। और जहां होता था वहां उन्हीं न्यायाधीशों को दोष देते थे। यही सब आर्यों का सिद्धान्त है। अर्थात् इन्हीं वेदादि शास्त्रों की रीति से आर्यों ने भूगोल में करोड़ों वर्ष राज्य किया है, इसमें कुछ सन्देह नहीं।''

॥ इति संक्षेपतो राजप्रजाधर्मविषय:॥२२॥ स्रोत-ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका

प्रधानमंत्री के विशेष गुण- राजा उसी को कहते हैं जो शुभ गुण, कर्म, स्वभाव से प्रकाशमान, पक्षपात रहित न्यायधर्म का सेवी, प्रजाओं में पितृवत् वर्ते और उनको पुत्रवत मान के उनकी उन्नति और सुख को बढ़ाने मे सदा यत्न करे।

-स्वमन्तव्यामंतव्य

आपसी फूट- आर्यों की आपस की फूट और ब्राह्मणों ने अपने स्वार्थ के कारण दूसरे वर्ण के लोगों को वेद नहीं पढ़ाए, परिणाम स्वरूप हमारे धर्म के इतने खण्ड हो गए हैं कि अब यह जानना कटिन हो गया है उनमें से कौन-सा ठीक है।

(महर्षि दयानन्द जीवन चरित पृष्ठ 298)

आपसी फूट- चक्रवर्ती राज्य का नाश उस समय तक नहीं होता, जब तक कि आपस में फूट न हो। **(पूना प्रवचन (उपदेश मंजरी) पृष्ठ 83)**

अस्पृश्यता और भेदभाव से देश की हानि- इसी मूढ़ता से इन लोगों ने चौका लगाते-लगाते विरोध करते-करते सब स्वातंत्रय, आनन्द, धन-राज्य, विद्या और पुरुषार्थ पर चौका लगाकर हाथ पर हाथ धरे बैठे हैं और इच्छा करते हैं कि कुछ पदार्थ मिले तो पकाकर खावें। परन्तु वैसा न होने पर जानो सब आर्यावर्त देश में चौका लगाकर सर्वथा नष्ट कर दिया है। **-सत्यार्थ प्रकाश पृष्ठ- 250**

कर व्यवस्था के दोष- ''सरकार कागद (स्टाम्प) बेचती है। और बहुत सा कागजों पर धन बढ़ा दिया है इससे गरीब लोगों को बहुत क्लेश पहुंचता है। सो यह बात राजा को करनी उचित नहीं क्योंकि इसके होने से बहुत गरीब लोग दु:ख पाकर बैठे रहते हैं। कचहरी में बिना धन के कोई बात होती नहीं। इससे कागजों के ऊपर जो बहुत धन लगाना है सो मुझको अच्छा मालूम नहीं देता। इसको छोड़ने से ही प्रजा में आनन्द होता है।

-सत्यार्थप्रकाश (प्रथम संस्करण- पृष्ठ- 348)

श्रीकृष्ण के प्रति महर्षि के विचार- देखो! श्रीकृष्ण का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव, चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश है। जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्रीकृष्ण ने जन्म से मरणपर्यन्त बुरा काम किया हो, ऐसा नहीं लिखा। और भागवत में दूध, दही, मक्खन की चोरी, कुब्जादासी से समागम, परस्त्रियों से रासमण्डल, क्रीडा आदि मिथ्या दोष श्रीकृष्ण में लगाये हैं। इसको पढ़-पढ़ा-सुन-सुनाके अन्य मतवाले श्रीकृष्ण की बहुतसी निन्दा करते हैं। जो यह भागवत न होता तो श्रीकृष्णजी के सदृश महात्माओं की झूठी निन्दा क्यों होती?

-सत्यार्थ प्रकाश 11वाँ समुल्लास

स्वास्थ्य संदेश

प्रकृति का स्वास्थ्य संदेश

क्रमशः गतांक से आगे

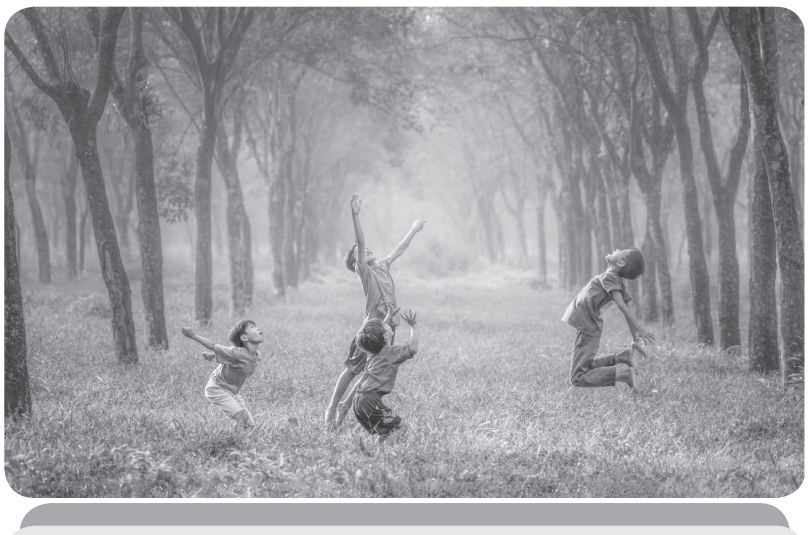

"रोगों का मूल कारण क्या है? अनुचित आहार, स्वादु भोजन, लोभ से अधिक खाना, बिना समय ग्रहण करना, देर रात्रि में खाना, बेमेल खाना, बिना चबाए खाना, भोजन के साथ-साथ ज्यादा पानी पीना, भोजन के बाद शारीरिक मेहनत न करना इत्यादि, यकृत की खराबी, पुराना ज्वर, नींद की कमी होना, धूम्रपान, गुटका, शराब, नशीले पदार्थों का सेवन करना, मैदे से बनी डिब्बा बंद चीजों का सेवन, गरिष्ट तली हुई चीजों का प्रयोग, चाय-काफी का अधिक सेवन आदि उपर्युक्त कारणों से व्यक्ति अस्वस्थ रहता है। केवल डॉक्टर या वैद्य हकीमों की दवाइयों से सन्तोष करके स्वयं को स्वस्थ मान लेना अनुचित है। शरीर में चाहे जितनी भी खराबी हो केवल दवाइयों के अन्धकार में ही हम भ्रमण करते हैं और जब रोग बढ़ जाता है तब मृत्युवश होकर ईश्वर पर छोड़ देते हैं। किसी भी रोग से पूर्ण रूपेण परिचित होने के लिए उसका स्वभाव और कारण से परिचित होना अति आवश्यक है।"

रामायण में एक प्रसंग आता है-भगवान श्रीराम जब वनवास में गए तब भरत अपने ननिहाल में थे। जिस समय भरत वापिस आए तो उन्होंने साकेत (स्वर्ग समान) नगरी में चहुं ओर मातम और मायूसी देखी। असलीयत से अंजान सभी लोगों ने यही समझा कि राम के वन जाने में कहीं न कहीं भरत का भी योगदान है। माता कौशल्या सहित सभी ने भरत को उपालम्भ देना प्रारम्भ किया। व्यथित हृदय भरत ने सभी को बहुत समझाने का प्रयास किया और जब कोई नहीं माना तो उन्होंने वहां पर बहुत विस्तृत भाषण द्वारा मानव मात्र को प्रेरणा प्रदान की थी।

बाल्मीकि रामायण में वर्णन आता है कि भरत श्रेष्ठ ने अपने भ्राता मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के वन जाने की जानकारी से अनजान होने का प्रमाण देते हुए अनेक महावाक्य कहे। उन्होंने कहा-जिसने भी राघव को वन में भेजा हो उसे वह पाप लगे जो सुप्त अवस्था में बैठी हुई गाय को लात मारने वाले को लगता है, विश्वास घात करने वाले को लगता है, छल-कपट करने वाले को लगता है और उन्होंने प्रकृति की उपासना का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए यह भी कहा था-

उभे संध्ये शयानस्य यत पापं परिकल्पयते।

तच्च पापं भवेत तस्य यस्यार्योऽनुमते गत:।।

जिसके कथन से भैय्या श्रीराम को वन में भेजा गया हो, उसे वही पाप लगे जो दोनों संध्याओं के समय अर्थात् सूर्योदय के समय और सूर्यासत के वक्त सोए हुए पुरुष को प्राप्त होता है।

वस्तुत: यह परमसत्य है कि जो लोग सूर्योदय होने के समय या उसके बाद तक सोते हैं उनको बहुत बड़ा पाप लगता है। इसके विपरीत जो सूर्यास्त के समय सायंकालीन बेला में सोए पड़े होते हैं उनको भी प्रकृति दण्डित करती है। लेकिन आज जैसे देर से सोना और देर से उठना एक फैशन सा बन गया है।

प्रभात में प्रकृति अमृत लुटाती है। जो लोग उस अमृत बेला में जागृत होते हैं वे अमृतकण प्राप्त करते हैं। उनका जीवन उत्साह, उमंग, उल्लास और खुशियों से परिपूर्ण होता है, आनन्दित होता है। और जो आलस्य में पड़े रहते हैं सोए रहते हैं उन्हें उदासी, निराशा तथा दु:ख, दारिद्रय प्राप्त होता है। शतपथ ब्राह्मण का कथन है-

कलि: श्यानो भवति संजिहानस्तु द्वापर:।

उत्तिष्ठंस्त्रेता भवति कृतं सम्पद्यते चरन।।

अर्थात् जब मनुष्य सोया रहता है तो वह उसके जीवन का कलियुग होता है, जंभाई लेने का नाम द्वापर है, उठकर खड़े होने का त्रेता और उठकर चल पड़ने का नाम सतयुग है।

अत: प्रकृति हर जगह शिक्षा दे रही है। एक तरफ ऊंचे पहाड़-शिखर हैं, जो दृढ़ निश्चय के, ऊंचाई के प्रतीक हैं। दूसरी तरफ खाईयां हैं। प्रकृति का यह रूप दर्शाता है कि निराशा की गहरी खाइयों से निकलकर ऊंचें-ऊंचे शिखरों को छूने का सतत् प्रयास करो। जीवन में सद्गुण ग्रहण करने वाले बनो। जहां से भी कोई गुण मिले उसे अपने जीवन में धारण करो। प्रभु से प्रार्थना करते हुए यही कहना कि हे प्रभु! सम्पूर्ण प्रकृति सजी हुई है, मैं भी अपने जीवन के गुलदस्ते को सजाकर रख सकूं मुझे ऐसा आशीर्वाद प्रदान करना।

संपूर्ण आर्य समाज परिवार 12 फरवरी, 2023 को इन्दिरा गांधी स्टेडियम दिल्ली में सादर आमंत्रित है

संपूर्ण भारत की आर्य समाजें, आर्य परिवार, आर्य शिक्षण संस्थान, गुरुकुल, कन्या गुरुकुल, आर्य विद्यालय, आर्य अनाथालय, वानप्रस्थाश्रम, संन्यास आश्रमों के अधिकारी, कार्यकर्ता, सदस्यों, संपूर्ण आर्य जगत परिवार पूरे दलबल के साथ 12 फरवरी 2023 को इंदिरा गांधी इंडोर स्टेडियम में महर्षि दयानंद की 200 वीं जयंती और आर्य समाज के 150 वें स्थापना दिवस के शुभारंभ अवसर पर प्रात: 8 बजे सादर आमंत्रित हैं।

अल्प समय में, वृहद आर्य समाज परिवार के हर व्यक्ति को व्यक्तिगत निमंत्रण दे पाना कठिन है, अत: अपना निजी कार्यक्रम समझें और इस्ट परिवार और मित्रों सहित अवश्य पधारें। अगर कोई निमंत्रण पत्र आदि किसी भी प्रकार की व्यवस्था संबंधी भूल होवे तो कृपया क्षमा करें।

जैसा कि यह सर्वविदित ही है कि आर्य समाज के संस्थापक, युग प्रवर्तक, सत्य के प्रकाशक महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200 वीं जयंती और आर्य समाज के 150 वें स्थापना दिवस को लेकर संपूर्ण आर्य जगत सहित मानव समाज में अत्यंत उमंग, उत्साह और उल्लास का वातावरण है। इस अवसर पर आर्य समाज द्वारा दो वर्षीय आयोजनों का शुभारंभ 12 फरवरी 2023 को इंदिरा गांधी इंडोर स्टेडियम में प्रात: 9 बजे से भव्य समारोह पूर्वक आयोजित होगा। जिसका उद्घाटन स्वयं भारत राष्ट्र के माननीय, यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी अपने करकमलों से करेंगे और उनका अपने चिरपरिचित अंदाज में उद्घाटन आह्वान, प्रेरक उद्बोधन होगा। जिसको भारत के कोने कोने में और विश्व की समस्त आर्य समाजें और आर्य संस्थाएं बड़ी स्क्रीन अथवा टीवी पर आर्य संदेश टीवी चौनल के माध्यम से लाइव देखेंगे। सार रूप में कहें तो यह आयोजन अपने आप में अद्वितीय, अनुपम और ऐतिहासिक रूप से सफल होगा, ऐसा आर्य समाज को पूरा विश्वास है।

12 फरवरी 2023 को इंदिरा गांधी इंडोर स्टेडियम के भव्य आयोजन की संयोजन समिति की ओर से आर्य समाज के सभी संन्यासी वृंद, वानप्रस्थी महानुभाव, आर्य समाजों के अधिकारी, कार्यकर्ता, सदस्यों, ब्रह्मचारी, ब्रह्मचारिणी इत्यादि समस्त आर्य जनों को सादर आमंत्रण है। आप सभी महर्षि दयानंद सरस्वती के अनुयाई और आर्य समाज परिवार के सदस्य होने के नाते प्रात: 8 बजे इंदिरा गांधी इंडोर स्टेडियम में पहुंचे और कार्यक्रम में सहभागी बनें। निवेदक, दिल्ली संयोजन समिति

बसों एवं कारों से आने वाले समस्त आर्यजनों के लिए उपयोगी विशेष जानकारियां

पहले आएं पहले पाएं की तर्ज पर जल्दी आने वाले महानुभाव अपने मनपसन्द स्थान और सीट पर बैठ सकेंगे।

अपने स्थान से चलने से पूर्व सभी के नाश्ते का प्रबंध अवश्य करलें और चलती बस/कार में ही सब नाश्ता करें।

बसों से आने वाले महानुभाव अपनी बस पर बैनर अवश्य लगाकर आयें। अपने बस ड्राईवर का मोबाइल नम्बर सेव करलें ताकि बाद में उससे सम्पर्क करने में आसानी हो।

अपनी बस की नम्बर प्लेट की फोटो भी खींच लेना उचित होगा। जिससे किसी भी तरह की कोई परेशानी न हो

बस में अपनी आर्य समाज के सेवक को अवश्य बैठाकर लायें ताकि बाद में उससे सम्पर्क करने में आसानी हो।

स्टेडियम में प्रवेश करने की व्यवस्था सम्बन्धी जानकारियां

स्टेडियम में समारोह स्थल पर प्रवेश द्वार 12 फरवरी को प्रात: 7:30 बजे खोल दिए जाएंगे एवं प्रात: 9:00 बजे के बाद सुरक्षा की दृष्टि से बंद कर दिये जाएंगे। इसलिए सभी आर्यजन 8:00 बजे तक पहुंचने का प्रयास करें

सभी आगंतुक अपना कोई एक सरकारी फोटो पहचान पत्र साथ लेकर आयें। बच्चों का आधार कार्ड या विद्यालय का फोटो पहचान पत्र लेकर आयें। 5 वर्ष से छोटे बच्चों को साथ लेकर न आएं।

स्टेडियम में भोजन ले जाना मना है। पानी की बोतल ले जा सकते हैं।

स्टेडियम में शौचालय की उत्तम व्यवस्था है। सभी आगंतुक शौचादि से निवृत्त होकर ही समारोह स्थल पर अपना स्थान ग्रहण करें तो अच्छा रहेगा।

प्रात: 9:00 बजे प्रवेश बंद होने के बाद प्रधानमंत्री जी के समारोह स्थल से जाने के बाद ही द्वार खुलेंगे।

पार्किंग एवं स्टेडियम में कार्यक्रम सम्बन्धी व्यवस्थाओं की जानकारियां

कार से आने वाले महानुभावों को आपका ड्राईवर स्टेडियम के गेट पर उतार कर राजघाट स्थित पार्किंग में अपनी कार पार्क करेंगे।

प्रधानमंत्री जी के प्रस्थान के पश्चात् भी दोपहर 1:00 बजे तक सुंदर, प्रेरक और भव्य कार्यक्रम जारी रहेगा। अत: अपने स्थान को न छोड़ें।

सभी वाहन राजघाट की ओर से आयेंगे। कार की बजाए बस से आने में ज्यादा सुविधा रहेगी। बस से आने वाले महानुभाव गेट संख्या 7, 8, 9, 10 से प्रवेश करेंगे। बसों की पार्किंग राजघाट पर होगी।

जब तक प्रधानमन्त्री जी कार्यक्रम में रहेंगे तब तक अपनी सीट से न स्वयं उठें और न ही आस-पास किसी को उठने देवें।

कार्यक्रम के पश्चात व्यवस्थाओं की जानकारियां

कार्यक्रम की समाप्ति लगभग 1:00 बजे होगी, समाप्ति के पश्चात् सभी आगन्तुक अपने निकटवर्ती निकास द्वार से धीरे-धीरे बाहर निकलेंगे।

निकास द्वार के बाहर ही भोजन-पैकेट के काउन्टर लगे होंगे। जहाँ से भोजन लेकर धीरे-धीरे आगे बढेंगे।

ध्यान रहे कि यह हमारा कार्यक्रम है और इसकी सफलता हमारे हाथ में ही है।

अपने ड्राईवर आदि से अपने कार/बस की लोकेशन पूछकर वहां तक जाएँ।

पहले मैं, पहले मै नहीं, पहले आप, पहले आप का व्यवहार अपनाएं, बच्चों और बुजुर्गों को प्राथमिकता दें

महर्षि दयानन्द की 200 वीं जयंती पर लाइटिंग से सजने लगीं आर्य संस्थाएं

सबसे सुन्दर और बेहतर लाइटिंग से सुसज्जित भवन को दिल्ली सभा की ओर से दिया जाएगा 51,000 का सम्मान पुरुस्कार

लाइटिंग से सजा हुआ रतन चंद आर्य पब्लिक स्कूल एवं आर्य समाज सैनिक विहार

महर्षि दयानंद सरस्वती की 200 मी जयंती और आर्य समाज के 150 वें स्थापना दिवस के 2 वर्षीय आयोजनों के शुभारंभ पर दिल्ली संयोजन समिति के अनुसार 5 फरवरी 2023 से सभी आर्य समाजों, शिक्षण संस्थानों और आर्यजनों द्वारा घरों को सजाने का निर्देश हुआ था। किन्तु उससे पूर्व ही आर्य समाजों, शिक्षण संस्थाओं और आर्य घर द्वार को लाइटिंग से सुंदर तरीके से सजाने का कार्य प्रारंभ हो चुका है। यहां पर प्रस्तुत है सजे हुए आर्य समाजों एवं घरों के कुछ छायाचित्र वस्तुतः लाइटिंग की इस सजावट से महर्षि की 200 जयंती की भव्यता बढ़ेगी, पूरी दिल्ली, एनसीआर, भारत के कोने कोने में और विश्व पटल पर एक सकारात्मक संदेश जाएगा, विशेष महोत्सव का वातावरण बनेगा, चारों तरफ उमंग, उत्साह और उल्लास की बानगी होगी। अतः आईए, 5 फरवरी से अपनी अपनी समस्त आर्य संस्थाओं को दीपावली की तरह सुंदर रंगबिरंगी लाइटिंग से सजाएं और महर्षि की महिमा को जन जन तक पहुंचाएं।

200 वीं जयंती पर कुछ विशेष नारे

महर्षि की 200 वीं जयंती, आर्य समाज की नयी क्रांति

महर्षि दयानंद सरस्वती की 200 की जयंती और आर्य समाज का 150 वां स्थापना दिवस, दोनों ऐतिहासिक अवसरों को ध्यान में रखते हुए 12 फरवरी 2023 को इंदिरा गांधी इंडोर स्टेडियम में दो वर्षीय आयोजनों के शुभारंभ अवसर पर आर्य जन महर्षि की महिमा और आर्य समाज के गौरवशाली इतिहास की गूंज को जन-जन तक पहुंचाने हेतु सारगर्भित, प्रेरक नारों का उद्घोष करें, मधुर भजनों का गान करें और उमंग उत्साह और उल्लास का परिचय देवें।

- सबसे प्यारा, सबसे न्यारा, महर्षि का 200 वां पर्व हमारा
- हम आर्य समाजी आर्य बनाएं, विश्वधारा को दिशा दिखाएं
- महर्षि का 200 वां जन्मदिवस है, आर्यजनों का प्रेरणा पर्व है
- जब चारों तरफ अंधेरा था, तब ऋषि सवेरा लाया था
- महर्षि की 200 वीं जयंती, आर्य समाज की नयी क्रांति
- घर घर वेद पहुंचाएंगे, सत्यार्थ प्रकाश पढ़ाएंगे
- 10 लोगों को नया जोड़ कर कीर्तिमान बनाएंगे करोड़ों की संख्या को अरबों तक पहुंचाएंगे
- महर्षि की शिक्षाओं को जन जन तक पहुंचाएंगे 200वीं जयंती को 2 वर्षों तक मनाएंगे

ध्यान रहे यह शुरुआत है, दो वर्ष तक चलेंगे आयोजन 12 से 19 फरवरी 2023 तक सप्ताह भर करें मानव सेवा के आयोजन

★ आर्य समाजों में विशेष यज्ञ, सत्संग, बच्चों की प्रतियोगिताएं और अन्य प्रेरक आयोजन करें
★ सोशल मीडिया पर महर्षि दयानंद की 200 वीं जयंती के बधाई संदेश और शिक्षाओं का प्रचार करें
★ हैसटैक दयानंद 200 के साथ जुड़ें और सभी को जोड़ें तथा प्रत्येक आयोजन की तरवीरें शेयर करें
★ महर्षि दयानंद सरस्वती की शिक्षाओं को जन जन तक पहुंचाने के लिए उनके द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश एवं अन्य साहित्य वितरण करें
★ मानव कल्याण के लिए रक्तदान शिविर एवं स्वास्थ्य जांच शिविरों का आयोजन करें
★ आसपास के सरकारी अस्पतालों में निर्धन रोगियों को फल आदि वितरित करें
★ सेवा बस्तियों में ऋषि लंगर चलाएं और आवश्यक वस्त्र एवं अन्नादि वितरित करें

महर्षि दयानन्द की 200 वीं जयंती मनाना हमारा परम सौभाग्य

धन्य है वह टंकारा, गुजरात की पुण्य धरा, जहां महर्षि दयानंद सरस्वती ने जन्म लिया। धन्य थे वे माता-पिता, जिन्होंने महर्षि को जन्म दिया। धन्य थे वे समस्त लोग जिन्होंने महर्षि का बचपन और किशोरावस्था देखी, धन्य थे गुरु विरजानंद दंडी, जिन्होंने युग प्रवर्तक महर्षि को शिक्षा दीक्षा प्रदान की, धन्य थे वे महापुरुष जिन्होंने महर्षि का साक्षात दर्शन किया, धन्य थे वे आर्यवीर बलिदानी जिन्होंने महर्षि की प्रेरणा से भारत माता की परतंत्रता की बेड़ियां काटने के लिए अपना सर्वस्व समर्पित कर अमरता को प्राप्त किया और धन्य हैं हम सभी आर्यजन जो आज महर्षि दयानंद सरस्वती की 200 वीं जयंती एवं आर्य समाज स्थापना के 150 वर्ष पूर्ण होने पर उमंग और उत्साह पूर्वक उनकी प्रेरणा का महोत्सव मना रहे हैं।

संपूर्ण संसार में महर्षि दयानंद सरस्वती एक ऐसी महान विभूति थे, जिन्होंने न केवल भारत राष्ट्र का भाग्योदय किया बल्कि संपूर्ण विश्व को सुदिशा प्रदान कर यह दर्शाया कि मनुष्य असीम शक्तियों का स्वामी है। मनुष्य की मुट्ठियों में आमूलचूल परिवर्तन लाने की अपार क्षमता विद्यमान है। किंतु यह तभी संभव है जब मनुष्य के भीतर जागृति आ जाए, जब वह अपने संभव और संभाव्य अस्तित्व को समझ जाए। महर्षि दयानंद के भीतर किशोर अवस्था में जिज्ञासा का सूर्य उदय हो गया था और उन्होंने अपने त्याग, तपस्या और साधना पूर्ण तपोबल से धरा पर फैले हुए अज्ञान, अविद्या, ढोंग, पाखंड और अंधविश्वास के तम को ऐसा तिरोहित किया कि भारत राष्ट्र सहित संपूर्ण विश्व में नये अरुणोदय की लालिमा प्रकाशित हो गई।

महर्षि का जन्म और जीवन मानव समाज के लिए प्रेरणा की अनमोल पाती है। महर्षि ने मानव कल्याण के लिए आर्य समाज की स्थापना 1875 में की थी, तब से लेकर अब तक लाखों-करोड़ों महापुरुषों ने उनके द्वारा निर्देशित वैदिक पथ पर चलकर अपना जन्म और जीवन सफल किया और युगयुगांतरों तक महर्षि की प्रेरणा से असंख्य जन कल्याण मार्ग के पथिक बनकर मानवता को संपोषित करते रहेंगे। वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों के प्रचार, प्रसार और विस्तार का क्रम अनवरत चलता रहेगा। लेकिन यह तभी संभव है, जब हम सब महर्षि के अनुयाई, उनके सजग सिपाही जागरूक होकर समाज को जगाते रहेंगे, धरती पर बढ़ रहे अज्ञान के अंधेरे को भगाते रहेंगे। महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200 वीं जयंती मनाने का हमें सौभाग्य मिला है। हमें इस अवसर को चूकना नहीं है, हमें हर चुनौती का सामना साहस से करना है और भारत सहित विश्व को वैदिक धर्मी बनाना है। इसके लिए महर्षि के अनुभूत वैदिक सिद्धांत और मान्यताओं को जानने और आत्मसात करने के लिए उनका प्रेरणाप्रद जीवन चरित्र पढ़ना और समझना अति आवश्यक है। उनके सत्यार्थ प्रकाश सहित संपूर्ण साहित्य को जन-जन तक पहुंचाएं और मानव सेवा का संकल्प लेकर जीवन सफल बनाएं।

-संपादक

What the Vedas Stand for

Continuing the last issue

When persons die, as stated in Yajurved, 40. 15, 'bodies are cremated and disposed of finally, and the immortal (indivi-

dual souls) are absorbed in the atmosphere'. And Yajurved.

39. 6. states that the departed souls, in a very short time,

pass through the solar, igneous, aerial or gaseous, radiant, lunar, seasonal, etherial, sublime, respiratory, glosso-pharyngeal, electric or energetic and all-bright or brilliant states or stages. Then, along with the rain clouds, they fall on a planetary soil, wherein they penetrate, being sucked by growing plants to be lodged finally into food-grains, which the beings eat to get blood, flesh, bones, marrow and the semen virile, whose every particle is a living germ or soul. This semen virile, when catches on firmly to an ovem in a womb, it comes into it and the foetus grows to a babe to be delivered off the womb in due course. That's the reason why the Vedas speak of soul as carried out to beinghood through foodgrain : "Yat annen atirohati"—Ya'urved, 31. 2; Rigved, 10. 90. 2; Samaved, 1. 6(3). 4. 6; Atharvaved, 19. 6. 4. The Vedant or Upanishads and the Bhagavadgita speak of the entire process in fairly good details.

The Vedas and the postvedic literature, also, make it plain that souls, with the exception of the state of dissolution and that of emancipation, when they are in the Divine Being, cannot remain without physical abodes, supplying the tools of inner and outer senses to work with, without which they cannot function.

For the above two reasons, according to the Vedas and the Vedic way of thinking, it's utterly nonsense to hold that after their passing away, souls can turn into evil spirits, taking interest in the affairs of this world, connected with their earstwhile existences, or ascending or discending the individuls

to vie with or interfere mith the Divine processes of creation, sustenance and disintegration of the universe and its creatures.

The Vedas, therefore, also don't support the eastern after-death rites of feeding and clothing the dead and the western practices of calculated mourning and raising the dead in churches, which practically amount to tomfooleries. Similarly, obeah. sorcery and witchcraft, an inportant part of the Semitic sacred writings, are foreign to the Vedas and the Vedic system of things.

The Vedas propound reincarnation and transmigration of souls as against the Semitic theories and practices of evil spirits and appeasement of the departed spirits and obeath, sorecry, witchcraft, and the rest of various forms of black arts.

(11) Motherland, Mother Tongue and Mother Culture

The Vedas have a practical and utilitarian approach to many problems of the human social and communal life without any conflict with the basic concepts of the physical and metaphysical progress of man.

One of such important things is nationalism, vis-a-vis, internationalism. The Vedas uniformly enjon that motherland (Mahi), mother tongue (Saraswati) and mother culture (Ida) have claim on an individual. Rigved, 1. 13. 9, 5.5.8 and Yajurved, 20. 43, 20. 63, 21. 19, 21. 37, 27. 19, 28. 8, 28. 18, 29. 8 state precisely that motherland, mother tongue and mother culture may be taken to be three goddesses (the glorious venerable) which should, always, be borne in heart, any violation of the same being unethetical, unnatural and unbecoming of a man or woman in this world.

Love for one's motherland or patriotism is instinctively corret and a pactical step in life and is pointedly recommended, nay enjoined, by the Vedas. The soil on which we are born, its products, its breeze and and the rest of things go to make up our outerself. Similarly, the language that we are broken into by our mother, father, kith and kin, play mates, teachers and country-men, and the culture that we are brought up into and trained by them make up our innerself, finding expression in our qualifications, modes of living, nature, tendencies, likes and dislikes. Like patriotism, love for the national language and the national outlook of of things have been enjoind by the Vedas, so long as they don't conflict with the development of man as a rational being under the canopy of the common fatherhood of the Divine Master and don't tarnish the basic concepts of international outlook of things in the interest of the common heritage of man and the individual and collective security, development and freedom.

(12) Vedic Polily and Allied Things

To be continued in next issue

आर्योद्देश्यरत्नमाला पद्यानुवाद

उपवेद-वेदांग-उपांग-नमस्ते

97-उपवेद

'आयुर्वेद' विचारता
रोगोषधि, अनुपान ।
'धनुर्वेद' शस्त्रास्त्र जो
राजधर्म का ज्ञान ।।119।।
गायन को 'गान्धर्व' दे
'अर्थ' शिल्प को ज्ञान ।
ये चारों 'उपवेद' भी
विज्ञानों की खान ।।120।।

98-वेदांग

शिक्षा, ज्योतिष, कल्प जो
व्याकृति, छन्द, निरुक्त ।
आर्य सनातन शास्त्र हैं ये
'वेदांग' प्रयुक्त ।।121।।

99-उपांग

न्याय, सांख्य, जो योग हैं,
मीमांसा, वेदान्त ।
वैशेषिक छः जानिए ये
'उपांग' निर्भ्रान्त ।।122।।

100-नमस्ते

मान्य, मान्यवर ! आपका
मैं करता हूं नित्य ।
अति लघु, सरल, महत्वयुत
'अभिवादन' शुभ कृत्य ।।123।।

साभार :

सुकवि पण्डित ओंकार मिश्र जी द्वारा पद्यानुवादित पुस्तक से

प्रेरक प्रसंग

पाप-कर्म करने के धार्मिक दिन पौराणिक कमी पूरी कर देते हैं।

24 दिसम्बर से 27 दिसम्बर 1924 ई. को सनातन धर्म सभा भटिण्डा का वार्षिकोत्सव था। बार-बार आर्य-सिद्धान्तों के बारे में अनर्गल प्रलाप किया गया। शंका-समाधान के लिए विज्ञापन में ही सबको आमन्त्रण था। पण्डित श्री मनसारामजी शंका करने पहुँचे तो पौराणिक घबरा गये। पण्डित श्री मनसारामजी के प्रश्नों से पुराणों की पोल खुल गई। चार प्रश्नों में से एक यह था कि पौराणिक ग्रन्थों में मांस-भक्षण का औचित्य क्यों है? उत्सव के पश्चात् पौराणिकों ने पं. गिरधर शर्माजी को फिर बुलाया। आपने कहा मांस-भक्षण का विधान इसलिए है कि अभक्ष्य का भक्षण करने वाला विशेष दिनों में ही मांस खाए, इसपर पण्डित मनसारामजी ने कहा यदि यह पाप कर्मों की धार्मिक विधि है तो फिर मनुस्मृति में मांस-भक्षण के लिए दण्ड क्यों?

पौराणिक भाई कभी आगा-पीछा नहीं देखते। हित-अहित सोचे बिना वे अपने हितैषी, मनुजता के मान ऋषवर दयानन्द व उनके शिष्यों को जली-कटी सुनाना ही अपना कर्त्तव्य समझते हैं। बात कुछ पुरानी हो गई। पौराणिकों ने एक पुस्तक में आपत्ति की कि आर्यसमाजी ईसाई, मुसलमान व दलितवर्ग को वैदिक धर्म में प्रविष्ट करके उनको आर्य बनाते हैं तो उनकी लड़कियाँ तो ले लेते हैं, अपनी लड़कियाँ उन्हें नहीं देते।

पण्डित श्री मनसारामजी वैदिक तोप ने इस आक्षेप के उत्तर में लिखा-यह निराधार है। ऐसे अनेक उदाहरण दिये जा सकते हैं कि आर्यों ने जन्ममूलक भेदभाव को हटाकर परस्पर सम्बन्ध जोड़े हैं, परन्तु यदि यह मान भी लिया जाए कि इसमें हमारी कोई कमी है तो हमारी इस कमी को पौराणिक मतावलम्बी पूरा कर देते हैं। माँगने पर इसकी लम्बी सूची दी जा सकती है। पण्डितजी का भाव स्पष्ट था कि पौराणिक जाति-पाती के कारण कितने भाई-बहिन प्रतिदिन विधर्मी बनते हैं, विधवाएँ तो विशेश रूप से।

-प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
के अन्तर्गत
वैदिक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित
वैदिक साहित्य
अब
amazon
पर भी उपलब्ध
अपनी पसंदीदा वैदिक पुस्तकें घर बैठे प्राप्त करने के लिए आज ही लॉगइन करें
bit.ly/VedicPrakashan
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
मो. 09540040339, 011-23360150

पृष्ठ 2 का शेष

प्रेम और करुणा की प्रतिमूर्ति थे, महर्षि दयानंद सरस्वती

युवा और वृद्ध हर आयु वर्ग को उन्होंने जीवन जीने की कला सिखाई।

कल्याण की राह दिखाई, लेकिन किसी संस्था का नामकरण अपने नाम पर नहीं होने दिया और न ही कोई शिष्य अथवा शिष्या बनाकर उनके ऊपर अपने नाम की मोहर लगाई, उनकी तो एक ही वसीयत थी कि मेरी देह की अस्थियों को राख सहित किसी अज्ञात खेत में फेंक देना ताकि संसार मेरी कोई निशानी न ढूंढ पाए और मेरी पूजा न होने लग जाए। एक बार किसी ने महर्षि दयानंद सरस्वती से प्रश्न किया कि क्या आप विद्वान हैं या अविद्वान हैं, महर्षि ने सीधा सरल उत्तर दिया कि मैं विद्वान भी हूं और अविद्व ान भी हूं। जिन-जिन विषयों की मुझे जानकारी नहीं है उनमें मैं अविद्वान हूं जिन जिन विषयों की मुझे जानकारी है उनमें मैं विद्वान हूं। आज अगर किसी से कोई पूछे कि आप इस विषय में जानते हैं तो आदमी ना जानते हुए भी अपनी योग्यता का बखान करने लगता है। इससे पता चलता है कि महर्षि सत्य ही करते थे, सत्य ही बोलते थे और सत्यमय जीवन ही जीते थे, ऐसे महापुरुष के महान कार्यों के विषय में योगी अरविंद ने लेखमाला लिखी थी, तब उन्होंने महर्षि दयानंद के नाम के साथ कोई ऋषि, मुनि, योगी आदि विशेषण नहीं लगाया, उनसे जब किसी ने इसका कारण पूछा तो उन्होंने कहा कि मैं जब-जब दयानंद के नाम के साथ कोई विशेषण का प्रयोग करता हूं तो मुझे बड़ा अजीब लगता है, क्योंकि ऋषि दयानंद का नाम अपने आप में पूर्ण है, इसके साथ कोई उपनाम लगाने से उनके नाम का अपमान है। वास्तव में संसार में ऋषि, मुनि, सिद्ध, साधक, सन्त, महात्मा, योगी तो अनेकानेक हुए हैं और आगे भी होंगे लेकिन दयानंद सा महर्षि होना बडी बात है। महर्षि का जैसा नाम है वैसा ही उनका कार्य सिद्ध हुआ, महर्षि दयानंद महान दयालु, कृपालु और धर्मात्मा थे।

महर्षि दयानंद सरस्वती सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका ने लिखते हैं कि आजकल बहुत से विद्वान प्रत्येक मतो में हैं, वे पक्षपात छोड़ सर्वतंत्र सिद्धांत अर्थात जो-जो बातें सब के अनुकूल सब में सत्य हैं, उनका ग्रहण और जो एक दूसरे के विरुद्ध बातें हैं उनका त्याग कर परस्पर प्रीति से बरतें और बरतावें तो जगत का पूर्ण हित होवे। महर्षि के इस संदेश में संपूर्ण जगत के कल्याण की भावना निहित है, उनका मानना था कि जो प्रचलित मत हैं, संप्रदाय हैं उनमें भी विद्वान हैं और उन मतों में भी सर्वतंत्र सिद्धांत हैं ,उनकी धारणा थी कि जो जो बातें सब मतो में एक दूसरे के अनुकूल और समान हैं उनका विद्वान प्रचार करें और जो-जो बातें प्रतिकूल तथा विरुद्ध हैं उनका प्रचार न किया जाए। महर्षि दयानंद सरस्वती का किसी से कभी कोई द्वेष भाव नहीं था, उन्हें तो असत्य से घृण ा थी क्योंकि वे हमेशा मनुष्य मात्र के हितैषी, पक्षधर थे, इसलिए महर्षि के मानने वालों में हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैन, भारतीय और विदेशी सब लोग थे। महर्षि ने सबको आर्य बनने और बनाने सन्देश दिया, उन्होंने अपने ग्रन्थों में तथा प्रवचनों में आर्यजाति, आर्यावर्त, आर्यभाषा आदि शब्दों का ही प्रयोग किया, उनका गुजराती, संस्कृत और हिंदी भाषा पर अधिकार था, किन्तु उन्होंने देशी विदेशी भाषाओं को सीखने की प्रेरणा मानव मात्र को प्रदान की। महर्षि का दृष्टिकोण विस्तृत और व्यापक था वे सम्पूर्ण मानवजाति और मानवता के हितैषी और धर्मात्मा महापुरुष थे।

महर्षि दयानंद सरस्वती की प्रतिभा असाधारण और अलौकिक थी, किंतु उनका सबसे बड़ा वैचारिक आंदोलन विशेष सिद्ध हुआ, उन्होंने मानव समाज में फैल रही कुरीतियों, ढोंग, पाखंड और अंधविश्वासो को दूर करने के लिए लगातार वैचारिक आंदोलन किए, समाज सुधार के लिए प्रत्येक विषय पर सत्य का प्रकाश किया। देश में चाहे आजादी की भावना का सूत्रपात करना हो, देश प्रेम जगाना हो, मनुष्य मात्र को सुपथ दिखाना हो, नारी जाति के ऊपर उनके उपकारो में चाहे विधवा विवाह प्रारंभ करना हो, सती प्रथा को बंद कराना हो, नारी को शिक्षा का अधिकार दिलाना हो, जातिवाद का भेद मिटाना हो, छुआछूत के रोग को दूर करना हो, अन्याय अनीति का नाश करना हो, उन्होंने बेबाक होकर के मानवता की रक्षा के लिए अपने वैचारिक संकल्पों की साधना की, वैदिक विचारधारा से जनमानस को परिचित कराया, उन्होंने मानव को मानव बनने की प्रेरणा दी और बताया कि वैदिक मान्यताओं को, सिद्धांतों को जानकर और मानकर ही उन पर चलने से मानव का कल्याण होगा। महर्षि दयानंद सरस्वती जी मानवजाति के महान उपकारक एवं परम हितैशी थे, क्षमाशीलता के महान उदाहरण थे, उन्होंने अपने प्राणघातक को दंडित करने व कराने का विचार तक नहीं किया, बल्कि उसे क्षमादान देकर, अभयता का दान देकर उपकृत कर गए, अपने प्रति किए गए बुरे व्यवहार, अपमान, तिरस्कार को सहकर भी वे सदा प्रसन्नता के साथ मुस्कुराए और दूसरों के दु:ख को देखकर अपने आंसू नहीं रोक पाए, अपने बड़े से बड़े अपराधी के अपराध से खिन्न होकर भी उन्होंने प्रत्येक को आत्म कल्याण का आशीर्वाद दिया। शक्तिशाली होकर भी उन्होंने अपनी शक्ति का उपयोग किसी को कष्ट देने के लिए नहीं किया, वे दुष्टों को भी सन्मार्ग दिखाते रहे, कल्याण मार्ग पर चलने की प्रेरण ा देते रहे, महर्षि के विचारों, शिक्षाओं को उनके उपदेश, संदेश, आदेश और निर्देशो को अपने जीवन में धारण करने का हम संकल्प लें, आर्य समाज के सेवाकार्यो को आगे बढ़ाएं, आगे बढ़ाते रहें और स्वयं आर्य बनकर संपूर्ण जगत को आर्य बनाने का सफल प्रयास करें, यही महर्षि की 200 वीं जयंती पर कृतज्ञता होगी। **-संपादक**

मैं आर्य समाजी कैसे बना?

इस स्तम्भ में उन महानुभावों का परिचय प्रकाशित किया जा रहा है जो किसी की प्रेरणा/ विचारधारा से आर्य समाजी बनें हों। यदि आपके साथ भी कुछ ऐसा हुआ है तो आप भी अपना प्रेरक प्रसंग अपने फोटो के साथ लिखें अपने आर्यसमाजी बनने की कहानी और भेज दें aryasabha@yahoo.com पर ईमेलं। आप हमें अपनी कहानी और फोटो डाक द्वारा भी भेज सकते हैं। हमारा पता है- **सम्पादक, आर्य सन्देश साप्ताहिक, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001**

MDH हवन सामग्री
मात्र 90/- किलो 10 एवं 20 किलो की पैकिंग
प्राप्ति स्थान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 1, मो. 9540040339

अधिकांश रूप से यह अनुभव किया जाता है कि स्थान विशेष पर या समय विशेष पर वैदिक सूक्तियों और प्रेरक सुभाषितों की आवश्यकता होती है। जैसे स्कूल में, गौशाला में, आश्रमों में, खेल के स्थानों पर, पर्व, उत्सव, सम्मेलन, महासम्मेलन, प्रभात फेरी, शोभायात्रा आदि में प्रेरणाप्रद प्रमाणिक वाक्य लिखने के लिए हम समय-समय पर विचार करते हैं। किन्तु उस समय पर हमें वह उपयोगी मैटर मिल नहीं पाता। अत: आर्य संदेश के सुधी पाठकों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए शास्त्रोक्त वचनों के प्रचार-प्रसार हेतु हमने एक नियमित कालम प्रारम्भ किया है। जिसमें हर बार कुछ सूक्तियां निरंतर प्रकाशित करने का प्रयास किया जाएगा। -संपादक

वैदिक सूक्तियां

१३- यज्ञशाला में-

यज्ञो वै श्रेष्ठतम कर्म -शतपथ०
(यज्ञ ही सबसे श्रेष्ठ कर्म है।)

स्वर्ग कामो यज्ञेत -शतपथ०
(स्वर्ग की कामना वाला यज्ञ करे।)

अयं यज्ञस्य भुवनस्य नाभि: -ऋ०
(यज्ञ ही इस भुवन की नाभि है।)

यज्ञो वै विष्णु
(यज्ञ ही विष्णु है।)

अयुर्यज्ञेन कल्पताम -यजु०
(यज्ञ से आयु की प्राप्ति होती है।)

त्रयो धर्मस्कंध:
यज्ञाध्ययनदानमिति प्रथम:
(धर्म के तीन स्कंध है
-यज्ञ, अध्ययन और दान।)

देवान यज्ञेन बोधय
-अथर्व-19-6-31

जुहुतो प्र च तिसठता
-अथर्व-1-15

प्रंचम यज्ञं प्रणायत सखाय:
-ऋग्वेद-10-10-2

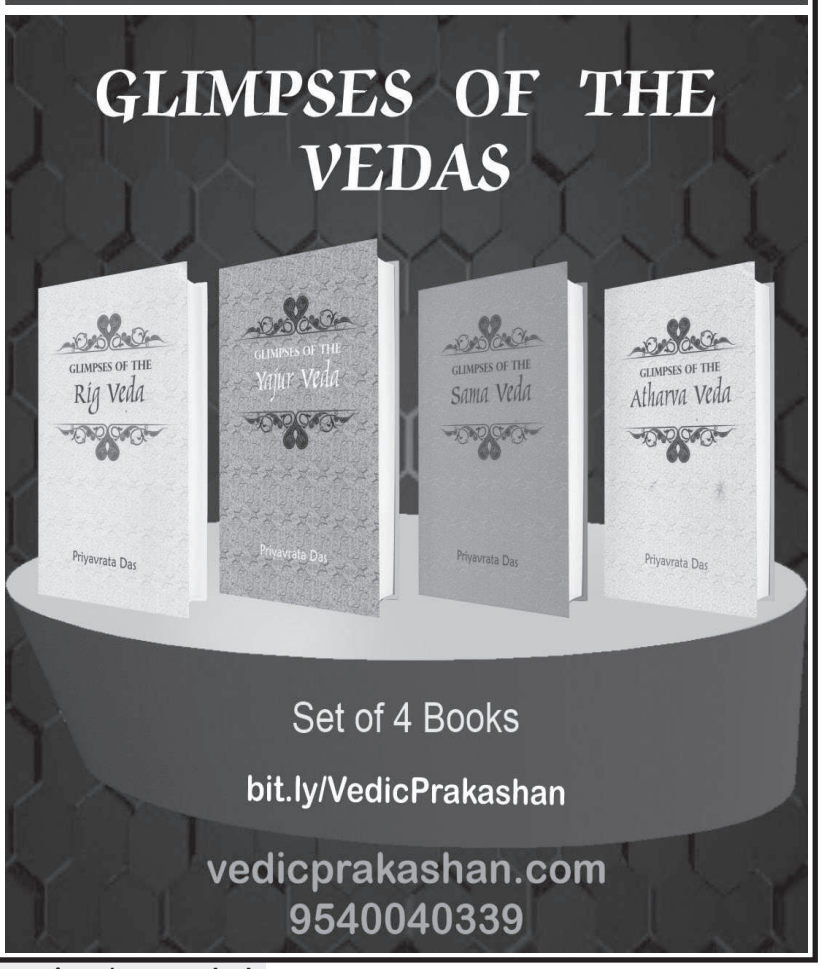

सोमवार 30 जनवरी, 2023 से रविवार 05 फरवरी, 2023
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि. नं0 डी. एल. (एन. डी.)- 11/6071/2021-22-2023
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 01-02-03 फरवरी, 2023 (बुध-वीर-शुक्रवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-2023
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथिः बुधवार 01 फरवरी, 2023

ओ३म्

आर्य समाजों की विभिन्न गतिविधियों से सम्बन्धित रजिस्टर उपलब्ध हैं

- आर्य समाज सदस्यता रजिस्टर
- आर्य समाज सदस्यता शुल्क (चन्दा) रजिस्टर
- भवन आरक्षण रजिस्टर
- आर्य वीर दल रजिस्टर
- आर्य वीरांगना दल रजिस्टर
- संस्कार (पुरोहित रजिस्टर)
- आर्य युवा महिला मिलन सदस्यता रजिस्टर
- आर्य बाल वाटिका रजिस्टर
- आर्य कुमार सभा रजिस्टर
- रसीद बुक रजिस्टर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
वैदिक प्रकाशन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
सम्पर्क सूत्र : 9540040339

प्रतिष्ठा में,

JioTV Jio TV+
आर्य समाज का एक मात्र टीवी चैनल
आर्य सन्देश टीवी
Arya Sandesh TV
अब जियो टीवी नेटवर्क पर भी
Jio Set Top Box और JIO मोबाइल App पर उपलब्ध

ओ३म्

भारत में फेले सम्प्रदायों की निष्पक्ष एवं तार्किक समीक्षा के लिए
उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षण मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ — सत्यार्थ प्रकाश — सत्य के प्रचारार्थ

प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23x36%16	मुद्रित मूल्य ₹60	प्रचारार्थ ₹40
विशेष संस्करण (सजिल्द) 23x36%16	₹100	₹60
पॉकेट संस्करण	₹80	₹50
विशिष्ट पॉकेट संस्करण	₹150	₹100
स्थूलाक्षर (सजिल्द) 20x30%8	₹150	₹100
उपहार संस्करण	₹1100	₹750
सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी अजिल्द	₹200	₹130
सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी सजिल्द	₹250	₹170

प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं

कृपया एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द जी की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें..

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph : 011-43781191, 09650522778
E-Mail : aspt.india@gmail.com

JBM Group
Our milestones are touchstones

TECHNOLOGY DRIVING VALUE
TOWARDS CREATING A
CLEANER | GREENER | SAFER
TOMORROW.

JBM Group - Plot No.9, Institutional Area, Sector 44, Gurgaon – 122 002
91-124-4674500-550 | www.jbmgroup.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व संपादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्पेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001, फोनः 23360150, 23365959, E-mail : aryasabha@yahoo.com, Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
● सम्पादकः धर्मपाल आर्य ● सह सम्पादकः विनय आर्य ● व्यवस्थापकः शिवकुमार मदान ● सह व्यवस्थापकः आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह